



**स्वच्छ विकास एवं जलवायु पर एशिया-प्रशांत साझेदारी  
मंत्रिस्तरीय उद्घाटन बैठक  
सिडनी, 11-12 जनवरी, 2006  
कार्य योजना**

साझेदारी की कार्य योजना जमीनी स्तर पर व्यावहारिक कार्यों के जरिये हमारी सामूहिक चुनौतियों के टिकाऊ समाधान विकसित करती है और इसके लिए सरकारी एवं उद्योग क्षेत्र के कार्य दलों का इस्तेमाल करते हुए एक नवोन्मेषी दृष्टिकोण बनाती है। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि हमारी साझेदार अर्थव्यवस्थाओं में टिकाऊ विकास को गति देने में अपने निजी क्षेत्रों, हमारी अनुसंधान संस्थाओं और अपनी सरकारों की क्षमताओं का इस्तेमाल ही सबसे बेहतर तरीका हो सकता है। इन मसलों पर विमर्श के लिए हम अपनी अर्थव्यवस्थाओं के सार्वजनिक, निजी एवं अनुसंधान क्षेत्रों के विशेषज्ञों को साथ लाएंगे। साथ ही हम संबंधित मसलों पर अपने अनुभवों को भी बांटेंगे। मसलन कार्यस्थल पर सुरक्षा और टेक्नोलॉजियों को ही लिया जा सकता है, जिनसे हमारी जनता की सेहत और भलाई की गारंटी मिलती है।

हमारी कार्य योजना बिजली उत्पादन और वितरण के साथ ही अपनी अर्थव्यवस्थाओं के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करती है।

हमने संयुक्त रूप से निम्नलिखित आठ सार्वजनिक-निजी क्षेत्र के कार्य दलों का गठन किया है: 1- स्वच्छतर जीवाश्म ऊर्जा, 2- नवीकरणीय ऊर्जा एवं वितरित उत्पादन 3- बिजली उत्पादन एवं प्रेषण, 4- इस्पात, 5- एलुमिनियम, 6- सीमेंट, 7-कोयला खनन और 8- भवन निर्माण एवं संबंधित उपकरण।

प्राथमिकता के आधार पर हरेक कार्य दल विस्तृत कार्य योजनाएं तैयार करेगा जिनमें तात्कालिक एवं मध्यकालिक विशिष्ट कार्यों की रूपरेखा तैयार करेगा। इसमें फ्लैगशिप परियोजनाओं और प्रगति के जरूरी सूचकों को शामिल किया जाएगा। इन्हें नीति एवं कार्यान्वयन समिति के समक्ष विचार के लिए शीघ्रातिशीघ्र, संभव हो तो, 2006 के मध्य तक

प्रस्तुत किया जाएगा।

हमने विभिन्न कार्य दलों को निर्देश दिया है कि वे अपने काम में खासकर निम्न बिंदुओं पर विचार करें:

- अपने से जुड़े क्षेत्र में स्वच्छ विकास एवं जलवायु की मौजूदा स्थिति का आकलन करें,
- ज्ञान, अनुभव और अच्छी कार्य पद्धतियों को आपस में बांटें, कि कैसे औद्योगिक सक्षमता, ऊर्जा सक्षमता और पर्यावरणीय नतीजों को बेहतर बनाया जा सकता है। इनमें मूल्यवान और व्यावहारिक अल्पकालिक कार्यों को भी शामिल किया जाए।
- एशियाई विकास बैंक एवं विश्व बैंक जैसे जरूरी अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संगठनों से सहयोग के विशिष्ट अवसरों की पहचान करें।
- लागत, कार्यक्षमता, बाजार में हिस्सेदारी और अवरोधों के संदर्भ में टेक्नोलॉजी की मौजूदा स्थिति को परिभाषित करें।
- परियोजना की लागत और कार्य प्रदर्शन के लक्ष्यों की पहचान करें और बताएं कि इन्हें प्राप्त करने के लिए क्या कदम उठाए जाएं, और
- जहां तक संभव हो, महत्वाकांक्षी एवं यथार्थ आधारित लक्ष्यों की पहचान करें।

अपने काम में प्रगति करते हुए प्रत्येक कार्य दल उन कामों की एक विस्तृत सूची तैयार करेगा, जो अपने राष्ट्रीय कार्यक्रमों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्रावधानों के जरिये अन्य साझीदार देशों में पहले ही इस्तेमाल में हैं। साथ ही यह भी रेखांकित करेगा कि अपने संसाधनों पर कैसे उनसे अधिकतम लाभ कमाया जा सकता है। टेक्नोलॉजी में सुधार और हरेक साझीदार देश में इस्तेमाल में लाई जा रही कार्य पद्धतियों में सुधार से जुड़ी परियोजनाओं और कार्यों को भी इनमें जोड़ा जा सकता है। इससे साझीदार देशों के बीच अनुभवों को बांट कर सबक सीखा जा सकता है।

योजना यह है कि इनमें टेक्नोलॉजी आधारित अनुसंधानों, शुरुआती पायलेट परियोजनाओं, प्रदर्शन हेतु बनाई गई परियोजनाओं और तैनाती योग्य परियोजनाओं, कार्यकुशलता में सुधार और आदान-प्रदान, वाणिज्यिक एवं सूचनात्मक आदान-प्रदान (मसलन उद्योग उन्मुखी कार्यशालाएं, उच्च स्तरीय संवाद) और सर्वोत्तम कार्यपद्धतियों को सब तक पहुंचाना जैसे कामों को शामिल किया जाए।

साझीदारी के पहले चरण में हमने अनेक विशिष्ट क्षेत्रों का चुनाव किया। विज्ञान स्टेटमेंट में ही परिवहन, और कृषि जैसे कई क्षेत्रों को रखा गया, जैसे-जैसे साझीदारी आगे बढ़ती है, हमें इन

क्षेत्रों में सहयोग के रास्ते तलाशने होंगे। हमारा विचार है कि भावी बैठकों में दिलचस्पी के अन्य क्षेत्रों, खर्चा कम करने के मसलों पर भी चर्चा होगी। साथ ही अपनी राष्ट्रीय स्थायी विकास एवं ऊर्जा रणनीतियों को विकसित करने और लागू करने से संबंधित अनुभवों को बांटने के लिए भी मंच प्रदान किया जाएगा।

## स्वच्छ जीवाश्म ऊर्जा कार्य दल

अध्यक्ष: ऑस्ट्रेलिया

सह अध्यक्ष: चीन

कोयला और गैस छहों साझीदार देशों के लिए न सिर्फ अत्यंत महत्वपूर्ण ईंधन हैं, बल्कि रहेंगे भी। कोयले और गैस की कुछ प्रमुख उन्नत प्रौद्योगिकियां हैं, जिनमें ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन, वायु जनित प्रदूषण और अन्य पर्यावरणीय प्रभावों के स्तर को कम करने की क्षमता है। ये उन प्रौद्योगिकियों पर केंद्रित हैं, जो कार्बनडाई ऑक्साइड के ग्रहण और भंडारण और वैकल्पिक उन्नत विद्युत उत्पादन प्रणाली से जुड़ी हैं। इनमें एकीकृत गैसीफिकेशन कंबाइंड साइकिल (आईजीसीसी), ऑक्सी ईंधन और पोस्ट कंबशन कैप्चर शामिल हैं। इनके अलावा अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल पल्वराइज्ड फ्यूल, कोयले की सफाई और प्रसंस्करण, पॉली जेनरेशन, हाइड्रोजन उत्पादन, बड़ी हुई कोयला पट्टी और वेसट कोल माइन मीथेन और कोयला गैसीकरण एवं लिक्विफैक्शन जैसी कुछ प्रौद्योगिकियां हैं जो जीवाश्म ऊर्जा के भविष्य को स्वच्छ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

यह स्वतःस्पष्ट है कि नई प्रौद्योगिकियों की लागत समय के साथ-साथ घटती रहती है। साझीदारी का एक बड़ा मकसद यह है कि सहयोग आधारित अनुसंधान और उनके सतत प्रदर्शनों के जरिये इन प्रौद्योगिकियों के विकास और प्रयोग को गति दी जाए, ताकि इनकी लागत कम हो और कम उत्सर्जन की विविध प्रौद्योगिकियों की एक फेहरिस्त हमारे पास हो। कम या शून्य उत्सर्जन वाली बिजली उत्पादन सुविधाओं के लिए प्रमुख प्रौद्योगिकियों के एकीकरण के अवसर हमारे पास उपलब्ध हैं।

इसके अलावा लिक्विफाइड नेचुरल गैस के वितरण में आने वाली बाधाओं की पहचान और उन पर विचार किए जाने की जरूरत है। साथ ही एशिया प्रशांत साझीदारी देशों में उच्च स्तरीय, पहुंच के भीतर और कम उत्सर्जन वाले ईंधन की बढ़ती जरूरत को पूरा करने की भी उतनी ही जरूरत है।

उद्देश्य

- एशिया-प्रशांत साझीदारी स्वच्छतर जीवाश्म ऊर्जा प्रौद्योगिकी विकास कार्यक्रम को विकसित करने के लिए मौजूदा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय उपायों और पहलों की दिशा में काम करना।
- साझीदार देशों में कार्बनडाई ऑक्साइड के भू-पृथक्करण अवसरों के लिए संभावनाओं की पहचान और प्रोत्साहन।
- एशिया-प्रशांत क्षेत्र में कोयला पट्टी, वेस्ट कोल माइन मीथेन गैस और एलएनजी या नेचुरल गैस के अवसरों और बाजारों को और विकसित करना।
- शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल की अदला-बदली जैसी टेक्नोलॉजी समर्थित पहलों के जरिये साझीदारों के यहां अनुसंधान एवं विकास का आधार मजबूत करना। साथ ही बाजार और सांस्थानिक आधार मजबूत करना।

## नवीकरणीय ऊर्जा एवं वितरित उत्पादन कार्य दल

अध्यक्ष: कोरिया गणराज्य

सह अध्यक्ष: ऑस्ट्रेलिया

हाइड्रो (बड़े या छोटे), सौर ऊर्जा, भू-तापीय, पवन एवं ज्वार की नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों से लगभग शून्य उत्सर्जन वाली बिजली पैदा की जा सकती है। वितरित उत्पादन (भू-कचरा मीथेन आधारित उत्पादन सहित) में भी उत्सर्जन को घटाने, लागत और नेटवर्क क्षमताएं बढ़ाने की पर्याप्त संभावनाएं निहित हैं। नवीकरणीय ऊर्जा एवं वितरित उत्पादन प्रणालियों की बड़े पैमाने पर तैनाती से ऊर्जा आपूर्ति में विविधता बढ़ती है और इससे ऊर्जा सुरक्षा में सुधार और दूरवर्ती एवं ग्रिड से दूर स्थित इलाकों में ईंधन-जोखिम में भी कमी आती है। मध्यम आकार के एवं छोटे स्तर के प्रयोगों के लिए उपयुक्त ये ऊर्जा स्रोत एवं वितरित उत्पादन प्रौद्योगिकियां गरीबी उन्मूलन में भी मददगार साबित होती हैं क्योंकि इनसे ऊर्जा सेवाओं तक पहुंच सुलभ होती है, रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और वायु की गुणवत्ता और जनता की सेहत में सुधार आता है।

अनेक नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के उभार का एक मतलब यह भी है कि उन्हें अपनाए जाने में बाजार और तकनीकी अवरोध खड़े हो सकते हैं। मसलन, लागत में प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी के विकल्पों के प्रति जागरूकता, उत्पादन में विराम एवं बिजली की किल्लत। बड़े पैमाने पर नवीकरणीय ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ाने और मार्ग की बाधाओं को दूर करने के लिए कई साझीदार देशों में काम हो रहा है। बहरहाल, टेक्नोलॉजी डिजाइन, सिस्टम प्लानिंग एवं

ग्रिड ऑपरेशंस में सुधार से वितरित यूटिलिटी एप्लिकेशंस की वित्तीय संभावनाओं को बल मिला है। इसके अतिरिक्त बायो डीजल एवं एथनॉल जैसे वैकल्पिक ईंधन भी भविष्य में उल्लेखनीय पर्यावरणीय दृष्टि से लाभकारी हो सकते हैं। इसी तरह लागत की दृष्टि से फायदेमंद इन विकल्पों को बड़े पैमाने पर अपनाने की संभावनाएं बढ़ गई हैं। कार्य दल ऐसी संभावनाशील प्रौद्योगिकियों और प्रयोगों, खासकर ग्रामीण, सुदूरवर्ती एवं शहरों से दूर स्थित प्रयोगों पर विशेष ध्यान केंद्रित करेंगे, जहां नवीकरणीय ऊर्जा और वितरित उत्पादन के प्रयोग लागत के लिहाज से फायदेमंद हों।

### उद्देश्य

- साझीदार देशों में नवीकरणीय ऊर्जा एवं वितरित उत्पादन प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन और तैनाती को बढ़ावा देना।
- नवीकरणीय ऊर्जा एवं वितरित उत्पादन प्रौद्योगिकियों, प्रणालियों एवं व्यवहारों की तैनाती के लिए देश विशेष की विकास जरूरतों और अवसरों की पहचान करना, साथ ही ग्रामीण, पर्यावरणीय जरूरतों को उपलब्ध करवाना ताकि सुदूर एवं शहरों के आसपास के इलाकों में स्थित प्रयोगों को आगे बढ़ाया जाए।
- वितरित ऊर्जा प्रणालियों के वित्तीय और इंजीनियरी लाभों को गिनाना, जिससे साझीदारी के आर्थिक विकास और जलवायु लक्ष्यों तक पहुंचा जा सकता है।
- अनुसंधान, विकास और नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन पर साझीदार देशों के बीच सहयोग भाव को और बढ़ाना। इसमें नवीकरणीय स्रोतों की पहचान, पवन की भविष्यवाणी और ऊर्जा भंडारण की प्रौद्योगिकियां जैसे मददगार उपाय भी शामिल हैं।
- ग्रामीण एवं शहर के आसपास के इलाकों के विकास और गरीबी उन्मूलन में मदद के लिए नवीकरणीय एवं वितरित उत्पादन प्रौद्योगिकियों की तैनाती के लिए सहकारी परियोजनाओं को समर्थन देना।
- ऐसी संभावनाशील परियोजनाओं की पहचान करना, जिससे साझीदारों को जरूरत के मुताबिक नवीकरणीय ऊर्जा एवं वितरित उत्पादन की व्यावहारिकता का आकलन करने में मदद मिले।

**बिजली उत्पादन एवं प्रेषण कार्य बल**

**अध्यक्ष: अमेरिका**

## सह अध्यक्ष: चीन

स्थिर एवं किफायती दामों पर बिजली की आपूर्ति हमारे आर्थिक विकास के लिए अपरिहार्य है। जब से विकासशील देशों में बड़ी संख्या में लोगों को बिजली की उपलब्धता होने लगी है, और विकसित देशों में विद्युतीकरण बढ़ने लगा है, विद्युत उत्पादन क्षेत्र सबसे बड़ा उत्सर्जक बन गया है और भविष्य में भी रहेगा। मॉडलिंग से पता चलता है कि अकेले तापीय बिजली के उत्पादन में विश्व की बेहतरीन प्रणाली के इस्तेमाल से ही वैश्विक उत्सर्जन में वर्ष 2010 तक 1.5 प्रतिशत वायु प्रदूषण में कमी आ सकती है। विद्युत सेक्टर में सहयोग के संभावित क्षेत्रों में विद्युत संयंत्रों की तापीय क्षमता में सुधार, ईंधन की बदली और/या मल्टी फायरिंग, बिजली बाजारों के सुधार, प्रेषण में होने वाले घाटे में कटौती और डिमांड साइड मैनेजमेंट को शामिल किया जा सकता है।

## उद्देश्य

- विद्युत उत्पादन, प्रेषण और डिमांड साइड मैनेजमेंट प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और लागू करने में व्यावहारिक कदमों हेतु अवसरों का आकलन, जिससे विकास एवं जलवायु से संबंधित चिंताओं से निजात मिले।
- साझेदार देशों के भीतर बिजली के उत्पादन और प्रेषण की क्षमता में सुधार के लिए विभिन्न कार्य पद्धतियों को प्रदर्शित करने और उन्हें लागू करने की व्यवस्था करना।
- प्रौद्योगिकियों और प्रविधियों में अनुसंधान और विकास पर साझेदारों के बीच सहयोग बढ़ाना।
- अन्य कार्य बलों (यथा- स्वच्छतर जीवाश्म ऊर्जा, नवीकरणीय ऊर्जा एवं वितरित उत्पादन, बिल्डिंग एवं उपकरण आदि) के जरूरी उद्देश्यों के साथ तालमेल बढ़ाना।
- ऐसी संभावित परियोजनाओं की पहचान करना जिनसे साझेदार देश अपनी विशिष्ट जरूरतों के हिसाब से अपने ऊर्जा भंडारों की व्यवहार्यता का आकलन कर सकें।
- ऐसे अवसरों की पहचान करना जिनसे ऊर्जा बाजारों और निवेश माहौल को सुधार कर सक्षम विद्युत आपूर्ति में निवेश बढ़ाया जा सके।

## इस्पात कार्य बल

अध्यक्ष: जापान

सह अध्यक्ष: भारत

एशिया-प्रशांत साझेदार विश्व के कुल इस्पात उत्पादन का 50 प्रतिशत भाग तैयार करते हैं।

इस्पात कार्यदल साझा देशों में सर्वोत्तम उपलब्ध टेक्नोलॉजी, कार्य व्यवहार और वातावरण प्रबंधन पद्धतियाँ लागू करना सुगम बनाने, और साथ ही रीसाइक्लिंग बढ़ाने के लिए कार्य करेगा। मौजूदा और उभरती टेक्नोलॉजियों के जरिये, तथा जो भी अन्य अवसर मौजूद हों उन्हें रेखांकित करके, कार्यबल ग्रीनहाउस गैस तथा अन्य उत्सर्जन स्तर घटाने के अवसरों के बारे में विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध कराएगा। सर्वप्रथम ध्यान चीन और भारत के इस्पात उद्योग पर केन्द्रित किया जायेगा। उर्जा एवं सामग्री कुशलताओं, टेक्नोलॉजी विकास और क्रियान्वयन, तथा मानकों और रिपोर्टिंग में सुधार सुनिश्चित करने के लक्ष्य से काम किया जायेगा।

## उद्देश्य

- क्षेत्र सम्बद्ध मानकों और प्रदर्शन संकेतकों का विकास
- इस्पात से सम्बद्ध सर्वोत्तम टेक्नोलॉजियों का प्रयोग सुगम बनाना
- साझा देश की सरकारों, इस्पात उद्योग और अनुसन्धान संस्थानों के बीच सहकार बढ़ाना
- इस्पात उत्पादन में उर्जा उपयोग, वायु दूषण और ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन घटाने की विधियाँ विकसित करना
- सम्पूर्ण साझेदारी के भीतर रीसाइक्लिंग का विस्तार

## एलुमिनियम कार्य बल

अध्यक्ष: ऑस्ट्रेलिया

सह अध्यक्ष: अमेरिका

विश्व के एलुमिनियम उत्पादन का 37 प्रतिशत अकेले एशिया-प्रशांत के साझेदारों के हिस्से में आता है। विकासशील देशों में एलुमिनियम उद्योग सबसे तेजी से विकसित हो रहे क्षेत्रों में एक है। इस तरह से उद्योग जगत मौजूदा उपकरणों के इस्तेमाल (खास कर के परफ्लूरोकार्बन्स उत्सर्जन प्रबंधन), बेहतरीन उपलब्ध और किफायती टेक्नोलॉजी (उन्नत इन्स्ट्रुमेंटेशन सहित), नई टेक्नोलॉजियों के निरंतर विकास और कार्यान्वयन और रीसाइक्लिंग का स्तर बढ़ा कर के अपनी लागत को तो कम कर ही सकता है, पर्यावरणीय प्रदर्शन में भी सुधार ला सकता है। साझेदारी के जरिये सदस्य देश पीएफसी में कटौती के वैश्विक लक्ष्यों तक पहुंच सकते हैं। साथ ही बेहतरीन

कार्य प्रणालियों को बढ़ावा देने, तकनीकी मदद बढ़ाने और बेहतरीन उपलब्ध और किफायती टेक्नोलॉजी के कार्यान्वयन की बाधाओं की पहचान करके ऊर्जा सक्षमता बढ़ाने और कार्बनडाई ऑक्साइड के प्रॉसेस उत्सर्जन से निबटने में योगदान कर सकता है।

### उद्देश्य

- वर्तमान उपकरणों के बेहतरीन इस्तेमाल के जरिये मौजूदा एलुमिनियम उत्पादन प्रक्रियाओं को बढ़ाना।
- सभी साझीदार अर्थव्यवस्थाओं में नई बेहतरीन एलुमिनियम उत्पादन प्रक्रिया को विकसित करने और अपनाने में उन्नति
- रीसाइक्लिंग और कार्य-प्रदर्शन सहित विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित डाटा को बढ़ाना
- साझीदार देशों के बीच एलुमिनियम रीसाइक्लिंग दरों में वृद्धि को सुगम करना।

### सीमेंट कार्य बल

#### अध्यक्ष: जापान

एशिया-प्रशांत के साझीदार देशों के खाते में दुनिया के कुल सीमेंट उत्पादन का 61 प्रतिशत आता है। सीमेंट कार्य बल साझीदार देशों में बेहतरीन उपलब्ध टेक्नोलॉजी और पर्यावरणीय प्रबंधन व्यवस्थाओं को अपनाने के लिए हर संभव कदम उठाएगी। ऐसा नई टेक्नोलॉजी से पुरानी टेक्नोलॉजी को बदल कर (मुख्यतया तरल भट्टा प्रक्रिया) किया जा सकता है, जिससे शुष्क प्रसंस्करण टेक्नोलॉजी, ऊर्जा सक्षम टेक्नोलॉजी, प्रक्रिया में सुधार, वेस्ट हीट रिकवरी से बिजली उत्पादन और निम्न स्तर के प्राइमरी ईंधनों और औद्योगिक कचरे की को-प्रोसेसिंग बढ़ाकर किया जा सकता है। कार्य बल ग्रीन हाउस गैस और अन्य उत्सर्जन स्तरों को कम करने के अवसरों के बारे में विशेषज्ञों की राय जुटाने में मदद करेगा। ऐसा वह मौजूदा और नई उभरती प्रौद्योगिकियों को अपना कर और अन्य प्रमुख अवसरों की पहचान करके कर सकते हैं।

### उद्देश्य

- साझीदार देशों में ऊर्जा सक्षम और स्वच्छतर प्रोडक्ट फॉर्मेशन टेक्नोलॉजियों के प्रदर्शन एवं कार्यान्वयन को सुनिश्चित करना ताकि ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन की स्थिति में गुणात्मक सुधार आए और सीमेंट के कारोबार में वायु प्रदूषण फैलाने वाले उत्सर्जनों को कम किया जा सके।
- विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मानक और कार्य-प्रदर्शन सूचकों को विकसित करना।
- ऊर्जा सक्षम सीमेंट और कंक्रीट निर्माण सामग्री का इस्तेमाल करने वाले विकासशील देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में बुनियादी संरचना बनाने के लिए अवसरों का

फायदा उठाना।

### कोयला खनन कार्य बल

अध्यक्ष: अमेरिका

सह अध्यक्ष: भारत

एशिया-प्रशांत के साझीदार देशों के हिस्से में दुनिया के कुल प्राइमरी कोयला उत्पादन का 65 प्रतिशत आता है। कोयला न सिर्फ साझीदार देशों में बल्कि विश्व स्तर पर भी ईंधन का मुख्य स्रोत है। आने वाले दशकों में इसके इस्तेमाल में कोई कमी आने वाली नहीं है। कोयले की खनन क्षमता और प्रॉसेसिंग में सुधार और कोयला खदान मीथेन गैस की मॉनिटरिंग और नियंत्रण में सुधार से उत्सर्जन में कटौती और कार्यस्थल सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान किया जा सकता है। कार्य बल खनन वाले इलाकों, रन ऑफ, बेकार पड़ी खदानों और बेहतर सुरक्षा प्रणालियों की पुनर्प्राप्ति और पुनर्वास के काम को भी अंजाम देंगे। कोयला खनन कार्य बल स्वच्छतर जीवाश्म ईंधन कार्य बल के साथ मिल कर काम करेगा। और कोयले की प्रॉसेसिंग और नई कोयला आधारित उत्पादन टेक्नोलॉजियों के सुधार में बेहतर तालमेल को सुनिश्चित करेगा।

### उद्देश्य

- खनन और प्रॉसेसिंग की क्षमता और अर्थव्यवस्था में सुधार करने लायक टेक्नोलॉजियों और कार्य पद्धतियों को सुनिश्चित करना और सुरक्षा में सुधार तथा पर्यावरणीय प्रभावों को कम करना।
- प्रत्येक राष्ट्र की परिस्थितियों के अनुरूप क्षमता संवर्धन, उत्सर्जन की सघनता और खदान पुनर्प्राप्ति से जुड़े यथा उचित लक्ष्यों को निर्धारित करना।
- हरेक देश में मौजूदा पुनर्प्राप्ति की गतिविधियों की पहचान करना और खनन भूमियों के संबंध में पुनर्प्राप्ति की सबसे अच्छी कार्यपद्धतियों की सूचना आपस में बांटना। कार्बन सीक्विस्ट्रेशन हेतु अवसरों में सुधार के लिए संवर्द्धित सतह रीक्लेमेशन पद्धतियों पर विशेष फोकस रहेगा।

### भवन एवं उपकरण कार्य बल

अध्यक्ष: कोरिया गणराज्य

सह अध्यक्ष: अमेरिका

भवनों और उपकरणों के लिए हमारे ऊर्जा के इस्तेमाल में कमी लाने से बुनियादी ऊर्जा की मांग

में कमी आती है। इससे आर्थिक प्रदर्शन में बेहतरी आती है, ऊर्जा सुरक्षा बढ़ती है, और ग्रीन हाउस गैस एवं वायु प्रदूषक उत्सर्जनों में कमी आती है। पिछले कुछ अर्से से साझीदार देशों को भवन एवं उपकरणों की ऊर्जा क्षमता बढ़ाने में सहयोग की अहमियत महसूस हो रही है। इसलिए उन्होंने इस दिशा में आपसी सहयोग के कई कदम उठाए हैं। चूंकि साझीदार देश विभिन्न उपकरणों के निर्माण में विश्व के अधिकांश उत्पादक देशों का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसलिए इस क्षेत्र में हम ऊर्जा क्षमता में क्षेत्रीय एवं वैश्विक सुधारों में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते हैं। साझीदार देश प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करेंगे, ऊर्जा क्षमता की ऑडिटिंग से संबंधित कौशल का आदान-प्रदान करेंगे, अनुभवों व नीतियों को बांटेंगे। मानकों और संहिताओं से संबंधित बेहतरीन कार्य प्रणालियों को तो बांटेंगे ही, साथ ही भवनों, निर्माण सामग्रियों और उपकरणों के लिए लेबलिंग योजनाओं पर भी एक-दूसरे को अवगत कराएंगे।

## उद्देश्य

- यह मानते हुए कि साझीदार देशों में बड़े पैमाने पर परस्पर सहयोग के काम हो रहे हैं, और अधिक ऊर्जा सक्षम उपकरणों का इस्तेमाल बढ़ाने में मदद के लिए सहकारिता के मैकेनिज्म बनाना।
- बेहतरीन कार्य प्रणालियों को बढ़ावा देना और प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन करना। नई और वर्तमान इमारतों में बिल्डिंग सामग्री की ऊर्जा सक्षमता बढ़ाने के लिए बिल्डिंग डिजाइन सिद्धांतों का निर्माण।
- व्यापक राष्ट्रीय प्रयासों के तौर पर ऊर्जा सक्षम भवनों एवं उपकरणों का इस्तेमाल बढ़ाने के लिए ऐसे मैकेनिज्मों के एकीकरण को समर्थन देना, जो टिकाऊ विकास का समर्थन करते हों, ऊर्जा सुरक्षा का संवर्धन और पर्यावरणीय प्रभावों को कम करते हों।
- अंतिम तौर पर ऊर्जा सक्षमता बढ़ाने वाली कार्य प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन में आने वाली बाधाओं को व्यवस्थित तरीके से पहचानना और उनका समाधान निकालना।

## कार्य बल प्रशासन

किसी भी कार्य बल का कार्यकाल इस बात पर निर्भर करता है कि उसके लक्ष्य क्या हैं, उसके अल्पकालिक और दीर्घकालिक कार्य क्या हैं? साझीदार देशों की यह अपेक्षा है कि स्वच्छ विकास एवं जलवायु के अन्य पहलुओं की छानबीन करने के लिए भविष्य में संयुक्त रूप से अन्य

कार्य बलों की स्थापना की जाए। इन कार्य बलों की अध्यक्षता साझीदार देशों के वरिष्ठ अधिकारी करेंगे। प्रत्येक कार्य बल के सदस्य इन देशों की सार्वजनिक, निजी एवं अनुसंधान संस्थाओं से लिए जाएंगे, ताकि अपने विषय के विशेषज्ञों को बलों में शामिल किया जा सके।

कार्य बल नीति एवं कार्यान्वयन समिति को रिपोर्ट करेंगे, जो बनाई गई कार्य योजनाओं पर विचार करेगी और यह फैसला करेगी कि किस परियोजना को अंतिम रूप से साझीदारी परियोजनाओं के रूप में आगे बढ़ाया जाए। हरेक परियोजना में शामिल होने के लिए हर साझीदार देश अपना निर्णय स्वयं करेगा। बहरहाल नीति एवं कार्यान्वयन समिति कार्य बल में किसी गैर-सदस्य देश की भागीदारी की अनुमति दे सकती है, यदि उससे कार्य बल के काम की प्रभावक्षमता में इजाफा होता हो।